गुरु एक झरोखा है

परमात्मा का

प्रश्न : कल का एक सूत्र था कि भक्ति उसके प्रति प्रेमरूपा है। कृपया समझाएं कि भक्ति की यात्रा और सद्गुरु के बीच कैसा संबंध है।

गुरु का अर्थ है : सोये हुओं में जागा हुआ व्यक्ति; अंधों में आंखवाला। बस इतना ही। तुम्हें जो स्मरण नहीं आ रहा है, उसे स्मरण आ गया है। तुम जिसे पीठ की तरफ छिपाये हो, वह उसके आमने-सामने खड़ा हो गया है। उसने अपनी आंखों में झांक लिया; उसने अपने हृदय में टटोल लिया—और उसने परमात्मा को छिपे वहां पाया है।

गुरु का अर्थ है : जो मिट गया और अब केवल परमात्मा है वहां।

परमात्मा तुम्हारे लिए बड़ी दूर का शब्द है। अनंत फासला मालूम होता है। तुम्हारी नींद में और परमात्मा में अनंत फासला मालूम होता है। होगा ही, क्योंकि परमात्मा जागे हुए चैतन्य का अनुभव है। इसलिए तो तुम मानते हो तो भी मान नहीं पाते। कहते हो, मानते हो, फिर भी भीतर संदेह खड़ा रहता है। लाख दबाते हो, छिपाते हो; मगर तुम जानते हो कि कहीं तो संदेह है : 'परमात्मा हो सकता है!'

मैंने सुना है कि एक आदमी की कार बिगड़ गयी थी। चाक एक बाहर आ गया था। और वह बड़ी गालियां बक रहा था, क्रोध में था। और गालियां तुम्हें सीखनी हों तो ड्राइवरों से सीखो, और कोई उतना कुशल नहीं। अकेला था। बीच जंगल में गाड़ी बिगड़ गयी है और वह गालियां दे रहा है, दिलभर के गालियां दे रहा है। एक दूसरी कार आकर रुकी। एक पादरी, एक ईसाई पुरोहित उसमें था, वह उतरा। उसने देखा

कि इतनी गालियां बक रहा है—और गालियां साधारण नहीं, परमात्मा तक को दे रहा है! तो उसने कहा, 'रुक भाई, यह उचित नहीं है। परमात्मा पर भरोसा कर। सब हो जाता है।'

उस आदमी ने कहा, 'कैसे सब हो जाता है? क्या यह चाक लग जाएगा जाकर?'

पादरी थोड़ा डरा, पर अब लौट भी नहीं सकता था अपनी बात से, तो उसने कहा, 'क्यों नहीं लग जाएगा? भरोसा हो, तो सब हो जाता है।'

तो उसने कहा, 'तुम ही प्रार्थना करो।'

अब पादरी और भी मुश्किल में पड़ा, क्योंकि वह भी जानता है कि 'परमात्मा है कहां? इतना न सोचा था कि बात आगे बढ़ जाएगी। अब यह आदमी सामने खड़ा है और अब पीछे लौटना भी कायरता मालूम होती है।' उसने सोचा कि एक कोशिश करने में क्या हर्ज है; यहां कोई और है भी नहीं इस जंगल में देखनेवाला; पराजय भी होगी तो बस इस एक आदमी के सामने। तो उसने प्रार्थना की—और हैरानी की बात : चाक उचका और गाड़ी में लग गया! तो उस पादरी ने आंख खोली, उस चाक को उचकते देखा तो वह चिल्लाया, 'हे भगवान, क्या तुम सच में हो?'

जिंदगीभर वह लोगों को परमात्मा के संबंध में समझा रहा था, और भरोसा नहीं है! धंधा है, व्यवसाय है। तो कोई पूजा का व्यवसाय करता है, कोई परमात्मा का व्यवसाय करता है। भरोसा किसी को नहीं है।

आस्तिक से आस्तिक, जिसको तुम कहते हो, वह भी भीतर संदेह को लिये बैठा है। इसलिए आस्तिक डरता है कि नास्तिक की बात कहीं कान में न पड़ जाए। असली आस्तिक डरेगा? शास्त्रों में लिखा है : 'नास्तिकों की बात मत सुनना।' ये शास्त्र आस्तिकों ने न लिखे होंगे—ये उन्होंने लिखे होंगे जिनके हृदय में संदेह का कीड़ा अभी भी है। अन्यथा डर क्या है? अगर तुम्हारे भीतर आस्था परिपूर्ण है, अगर तुम्हारा संदेह सच में ही समाप्त हो गया है, जल गया है, तो नास्तिक की बात सुनने में भय क्या है? जरूर सुनना। शायद तुम्हारे शांत मौन श्रवण को अनुभव करके नास्तिक के जीवन में कोई फर्क हो जाए। तुम्हारे जीवन में तो कोई अंतर पड़नेवाला नहीं; शायद तुम्हारे ईश्वर की अनन्य आस्था नास्तिक को भी संक्रामक हो जाए! आ जाने देना पास।

लेकिन आस्तिक डरते हैं, भयभीत होते हैं। डर अपने ही संदेह का है, कोई और तुम्हें डरा नहीं सकता।

तुम भयभीत हो, डरे हुए हो। तुम्हें पता है कि अगर बाहर से कोई संदेह की बात करे तो तुम्हारे भीतर का संदेह, जो सो गया है, जग जाएगा, छिपा है, प्रगट हो जाएगा; बाहर का संदेह तुम्हारे भीतर के संदेह को पुकार दे देगा, प्रतिसंवेदन शुरू हो जाएगा, तुम भीतर कंपने लगोगे।

परमात्मा दूर है बहुत तुम्हारे लिए, नींद में बड़ा दूर है! वस्तुतः दूर नहीं है; तुम्हारे नींद का ही फासला है। परमात्मा के लिए तुम दूर नहीं हो, तुम्हारे लिए परमात्मा दूर है—इसे ध्यान रखना।

जैसे तुम सोये हो, सूरज निकल आया, सूरज की किरणें तुम्हारे ऊपर बरस रही हैं, लेकिन तुम सोये हो : सूरज के लिए तुम दूर नहीं हो, तुम्हारे ऊपर बरस रहा है, तुम्हारे रोएं-रोएं को जगाने की चेष्टा कर रहा है; लेकिन तुम गहरी नींद में हो, तुम्हारे लिए सूरज तो बहुत दूर है, पता ही नहीं कि है भी या नहीं। तुम तो गहन अंधकार में खोये हो।

ऐसी घड़ियों में जब परमात्मा बहुत दूर मालूम पड़ता है, सदगुरु उपयोगी हो सकता है : क्योंकि सदगुरु तुम जैसा है, तुम्हारे पास है, मनुष्य जैसा मनुष्य है, हड्डी-मांस-मज्जा का है—और फिर भी तुमसे कुछ ज्यादा है; और फिर भी तुमने जो नहीं जाना उसने जाना है; तुम जो कल होओगे उसकी वह खबर है। वह तुम्हारा भविष्य है। वह तुम्हारी संभावनाओं का द्वार है।

परमात्मा बहुत दूर है; गुरु बहुत पास है। इसलिए परमात्मा के पास गुरु के बिना शायद ही कभी कोई पहुंच पाता है। गुरु ऐसा झरोखा है जिससे दूर के आकाश को तुम देख पाओगे। झरोखा पास है।

कमरे में तुम बैठे हो, तुमसे मैं आकाश की बातें करूं और आकाश के अनंत सौंदर्य की चर्चा करूं—व्यर्थ है। तुमसे फूलों की वार्ता करूं—व्यर्थ है। लेकिन एक झरोखा खोल दूं, एक खिड़की खोल दूं जो बंद थी—तुम अपनी ही जगह हो, तुममें कोई फर्क नहीं हुआ, तुम उठे भी नहीं अपनी जगह से, तुम अपनी ही कोच पर आराम कर रहे हो, तुमने कुछ भी फर्क न किया—लेकिन एक झरोखा खुल गया : दूर का आकाश अब उतना दूर नहीं! एक कोना आकाश का दिखायी पड़ने लगा—और कोने को जिसने पकड़ लिया वह पूरे को पकड़ ही लेगा। थोड़ी फूलों की गंध भी भीतर आने लगी। थोड़ी-सी किरणें भी आ गयीं और नाचने लगीं फर्श पर। तुम वहीं के वहीं बैठे हो, तुममें कोई फर्क नहीं हुआ; लेकिन एक झरोखा

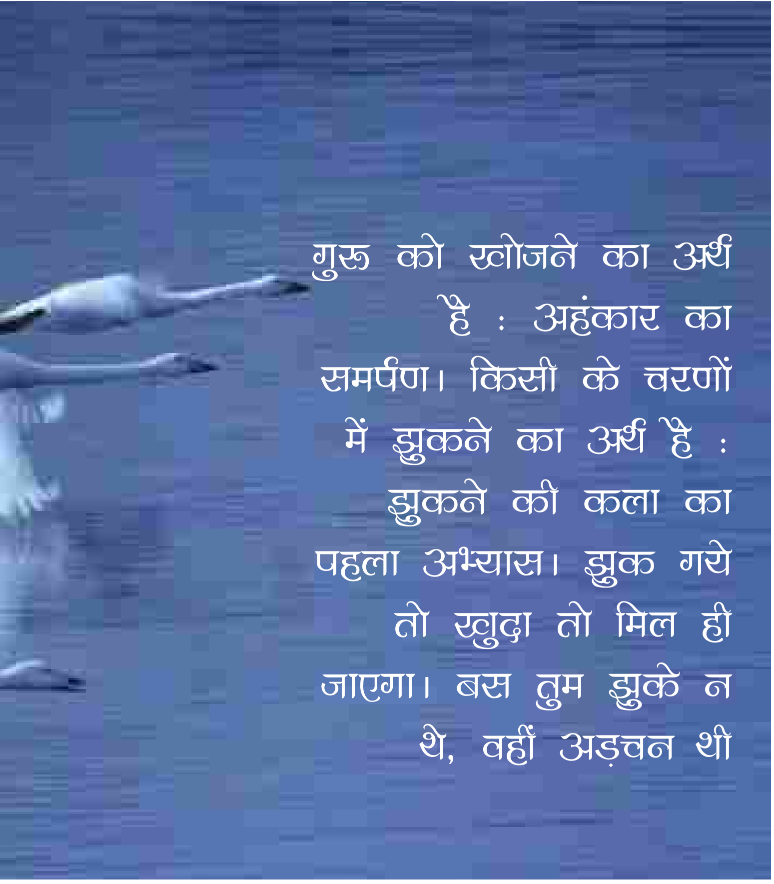

तुम्हारे पास खुल गया!

गुरु एक झरोखा है। तुम वही हो, लेकिन गुरु के पास होते ही उस झरोखे से तुम बड़े आकाश को, विराट आकाश को झांक पाओगे।

गुरु जैसे बूंद है, लेकिन बूंद का स्वाद तो वही है जो सागर का है : वैसा ही नमकीन।

बुद्ध कहा करते थे कि बूंद चख लो एक सागर की, तुमने सारा सागर चख लिया।

गुरु एक बूंद है, लेकिन ऐसी बूंद जिसने पहचान लिया अपने भीतर छिपे सागर को। तुम भी बूंद हो, लेकिन ऐसी बूंद जिसे अपने भीतर छिपे सागर की कोई खबर नहीं। बूंद और बूंद की थोड़ी बात हो सकती है। ऐसे तो गुरु और शिष्य के बीच भी वार्ता बहुत मुश्किल है, तो खोजी और परमात्मा के बीच तो वार्ता असंभव है।

गुरु पर रुकना नहीं है; गुरु से गुजर जाना है। गुरु तो द्वार है; उससे तो पार हो जाना है। इसलिए सद्गुरु और गुरु में यही फर्क है।

सद्गुरु का अर्थ है : जो तुम्हें परमात्मा की तरफ ले जाए; इतना ही नहीं जो तुम्हें तुमसे मुक्त करे और जो तुम्हें अपने से भी मुक्त करे।

वही गुरु सद्गुरु है जो तुम्हें अपने से भी मुक्त होना सिखाये, नहीं तो आखिर में गुरु पकड़ जाएगा। कहीं ऐसा न हो कि कोच से तो तुम उठ आओ और खिड़की के चौखटे को पकड़ लो। तब तुम चूक गये। तो जो तुम्हें अपने को पकड़ाने की चेष्टा में लगा हो उससे सावधान रहना।

गुरु पहले तुमसे तुम्हारा संसार, तुम्हारे गलत दृष्टिकोण छीन लेगा। और जब वे छिन गये, तो आखिरी चीज जो वह छीनेगा, वह स्वयं को तुमसे छीन लेगा, ताकि तुम खुले आकाश में प्रवेश पा जाओ।

और असली सवाल झुकने की कला सीखने का है। गुरु के पास तुम झुकने की कला सीख लोगे। जिस दिन तुम्हें झुकना आ गया, बस सब आ गया। असली सवाल मिटने की कला सीखने का है। गुरु के पास तुम मिटना सीख लोगे। जिस दिन मिटना आ गया, सब आ गया।

'कुछ जज्ब-ए-सादिक हो, कुछ इखलासो-इरादत
इससे हमें क्या बहस वह बुत है कि खुदा है।'

'कुछ जज्बए सादिक हो'—कुछ सत्य भावना हो, कुछ प्रेम का आविर्भाव हो; 'कुछ इखलासो-इरादत'—कुछ हमारे इरादों में, हमारी भावनाओं में, प्रेम के अंकुर का अंकुरण हो; 'इससे हमें क्या बहस, वह बुत है कि खुदा है'—वह पत्थर की मूर्ति हो कि परमात्मा हो, इससे क्या बहस! थोड़ा प्रेम करना आ जाए, थोड़ा स्वाद लग जाए अनंत का, थोड़ी भावना की पवित्रता आ जाए, थोड़ी झुकने की कला समझ में आ जाए।

बहस नासमझ करते हैं। समझदार समय का उपयोग कर लेते हैं और जीवन की कोई गहराई सीख लेते हैं।

यही फर्क है विद्यार्थी और शिष्य में।

विद्यार्थी बहस में उत्सुक हैं, शिष्य जीवन को बदलने में। विद्यार्थी कुछ ज्ञान की सूचनाएं इकट्ठी करने चला आया है, शिष्य अस्तित्व को बदलने आया है। विद्यार्थी दांव पर कुछ भी नहीं लगाता। विद्यार्थी तो सिर्फ स्मृति का निखार कर रहा है। शिष्य जीवन को दांव पर लगाता है; सब कुछ खोना हो तो भी तैयारी दिखलाता है। क्योंकि जब तक तुम सब खोने को तैयार न हो जाओ तब तक तुम सब को पाने के मालिक न हो सकोगे। जिसने सब खोया उसने सब पाया।

तो, गुरु के पास तो बारहखड़ी सीखनी है, 'अल्फाबेट'। परमात्मा का गीत तो अभी कठिन पड़ेगा। तुम्हें अभी बारहखड़ी ही नहीं आती। गुरु के पास अ ब स सीख लेना है—अ ब स परमात्मा का। जब तुम सीख गये, तुम चले अपनी यात्रा पर।

पक्षी के बच्चे पैदा होते हैं, अंडों से बाहर आते हैं। तुमने कभी देखा होगा झाड़ों में लटके घोसलों के किनारों पर बैठे, डरते हैं, आकाश को देखते हैं : आकाश बड़ा है! अभी तक अंडे में रहे थे, बड़ी छोटी दुनिया थी, बड़ी सुरक्षित थी, ऊष्ण थी। मां गरमी देती रहती थी। अब दुनिया बड़ी ठंडी मालूम पड़ती है। वह ऊष्णता मां की गयी। किनार पर बैठते हैं वे, मां उड़ती है। वह उड़ान उनके भीतर भी किसी सोयी हुई, प्रसुप्त आकांक्षा को जन्म देती है। वे भी उड़ना चाहते हैं—कौन नहीं उड़ना चाहता! क्योंकि उड़ने में मुक्ति है, स्वातंत्र्य है। लेकिन डगमगाते हैं, डरते हैं। बैठे हैं घोंसले के किनारे। उन्हें अपने पंखों का पता नहीं। हो भी कैसे सकता है? पंखों का पता तो तभी चलता है जब तुम उड़ो। उड़ने के पहले पंखों का पता चल नहीं सकता। उड़ने के बिना कैसे तुम जानोगे कि तुम्हारे पास भी पंख हैं? पैर पता चलते हैं जब तुम चलते हो। आंख पता चलती है जब तुम देखते हो। कान पता चलते हैं जब तुम सुनते हो। पंख पता चलते हैं जब तुम उड़ते हो।

असली सवाल झुकने की कला सीखने का है। गुरु के पास तुम झुकने की कला सीख लोगे। जिस दिन तुम्हें झुकना आ गया, बस सब आ गया। असली सवाल मिटने की कला सीखने का है। गुरु के पास तुम मिटना सीख लोगे

अभी पक्षी उड़ा नहीं, अभी अंडे से बाहर आया है। अभी उसे कैसे पता हो सकता है कि मेरे पास भी पंख हैं। अभी वह डरता है। क्या करता है? क्या चाहता है? चाहता है उड़ना। कोशिश भी करता है, लेकिन पकड़े है जोर से घोंसले को कि कहीं इस विराट शून्य में खो न जाए।

मां क्या करती है? एक धक्का देती है। घबड़ाता है पक्षी, घबड़ाहट में पंख खुल जाते हैं। घबड़ा कर लौट आता है वापस एक चक्कर मारकर, लेकिन अब उसे पता हो गया : पंख उसके पास हैं; थोड़ी देर होगी चाहे, कला सीखने में थोड़ा समय लगेगा—लेकिन पंख हैं! एक बड़ा भरोसा आया! एक हिम्मत जगी! एक आत्मविश्वास का जन्म हुआ : 'तो यह आकाश भी अपना है!' दो छोटे पंखों के सहारे पूरा आकाश अपना हो जाता है। बस, दो छोटे पंखों के सहारे सारे आकाश की मालकियत मिल गयी! फिर थोड़ी-थोड़ी दूर जाने के प्रयोग करता है—और दूर, और दूर, बड़े वर्तुल बनाता है—और एक दिन फिर दूर आकाश की यात्रा पर निकल जाता है। अब मां को धक्का देने की जरूरत नहीं पड़ती।

गुरु तुम्हें एक धक्का देगा घोंसले के बाहर। इससे ज्यादा कुछ भी नहीं। यह तुम भी कर सकते थे। जब तुम कर लोगे तब तुम पाओगे : 'अरे, यह तो मैं भी कर सकता था!' लेकिन यह तुम पाओगे तब जब तुम कर लोगे। इसके पहले, इसके पहले कैसे तुम जानो कि पंख हैं? गुरु तुम्हें दिखा देगा तब तुम्हें लगेगा : 'अरे, यह तो बिना गुरु के भी हो सकता था!'

कृष्णमूर्ति के साथ यही हुआ : धक्का दिया एनीबीसेंट ने, लीडबीटर ने, उनके गुरुओं ने—पंख खुले! कृष्णमूर्ति को समझ आयी कि 'यह तो मुझसे ही हो सकता था। पंख मेरे, पंख खुले तो मेरे : धक्के के बिना भी अगर मैं जरा-सी हिम्मत कर लेता तो हो जाता।' तब से चालीस-पचास वर्ष बीत गये, वे दूसरों को यही सिखा रहे हैं कि हिम्मत करो, कूद जाओ, पंख तुम्हारे हैं, गुरु की कोई जरूरत नहीं! लेकिन कोई कूदता हुआ मालूम नहीं पड़ता। बात बिलकुल ठीक कहते हैं। बात में जरा भी गलती नहीं है। भूल-चूक कोई खोज नहीं सकता इसमें।

लेकिन कोई चाहिए जो तुम्हें धक्का दे दे। और जब गुरु धक्का देगा तो बहुत बुरा लगेगा। तो पहले गुरु तुम्हें पास बुलाएगा, प्रेम देगा, ताकि तुम आ जाओ और निकट, और निकट, और निकट; फिर एक दिन धक्का देगा। तुम चौंकोगे बहुत : ऐसा प्रेमी आदमी ऐसा दुष्ट कैसे हो गया! लेकिन जरूरी है कि वह धक्का दे तभी तुम्हारे पंख खुलेंगे।

इसलिए जो परमात्मा को खोजने चले हों सीधे वे थोड़ा सम्हल जाएं : वह सीधी खोज कहीं अहंकार का ही नया करतब न हो, कहीं अहंकार की ही नयी ईजाद न हो! फिर ऐसे लोग हो सकता है वहीं बैठे रहें घोंसले में, आंख बंद कर लें और खुले आकाश के सपने देखने लगें। वह आसान है।

गुरु को खोजो; परमात्मा की खोजने चले हों सीधे वे थोड़ा सम्हल जाएं : वह सीधी खोज कहीं अहंकार का ही नया करतब न हो, कहीं अहंकार की ही नयी ईजाद न हो! फिर ऐसे लोग हो सकता है वहीं बैठे रहें घोंसले में, आंख बंद कर लें और खुले आकाश के सपने देखने लगें। वह आसान है।

गुरु को खोजो; परमात्मा की खोज की कोई जरूरत नहीं। गुरु को खोजते ही वह खोज हो जाएगी।

'है फर्ज तुझे पै फकत बंदा-ऐ-खुदा की तलाश
खुदा की फिक्र न कर, वोह मिला, मिला-न-मिला।'

उसकी बहुत चिंता नहीं है। लेकिन किसी खुदा के बंदे की तलाश कर ले। किसी गुरु को खोज ले। फिर परमात्मा मिला न मिला, तू छोड़ फिक्र।

मिल ही जाएगा, उसकी बात ही मत उठा। क्योंकि गुरु को खोजने में ही पहला कदम उठ जाता है।

गुरु को खोजने का अर्थ है : अहंकार का समर्पण।

किसी के चरणों में झुकने का अर्थ है : झुकने की कला का पहला अभ्यास।

झुक गये तो खुदा तो मिल ही जाएगा। बस तुम झुके न थे, वहीं अड़चन थी।

इसलिए गुरु की बड़ी अनिवार्यता है। जरूरत बिलकुल नहीं है, अनिवार्यता है पूरी। जरूरत बिलकुल नहीं है; ऐसा लगता है कि हो सकता है अपने-आप। कहां अड़चन है? पंख तुम्हारे पास हैं, उड़ने की क्षमता तुम्हारे पास है, आकाश मौजूद है, सब मौजूद है—फिर गुरु की क्या जरूरत है? अगर कोई तर्क से विचार करे तो गुरु की जरूरत मालूम नहीं होगी। लेकिन तुम में साहस नहीं है, इसलिए गुरु की जरूरत है। वह साहस को कौन पूरा करे? तुम्हें हिम्मत कौन दे? कौन तुम्हें धक्का दे दे?

मेरे गांव में एक बूढ़े सज्जन हैं। उन्होंने करीब-करीब गांव के सभी बच्चों को तैरना सिखाया होगा। वे नदी के प्रेमी हैं। और गांवभर के बच्चे जैसे ही तैरने योग्य हो जाते हैं, नदी पहुंच जाते हैं। और वे सुबह पूरा समय पांच-छह घंटे का, गांवभर के बच्चों को तैरना सिखाने में देते हैं। मुझे भी उन्होंने ही तैरना सिखाया। जब मैं सीख गया, मैंने उनसे कहा, 'यह भी कोई बात हुई, तुमने सिखाया जरा भी नहीं, सिर्फ मुझे धकाया।' उन्होंने कहा, 'बस वही सिखाया।' वे फेंक देते हैं बच्चे को। बच्चा घबड़ाता है। वे खड़े हैं सामने। दो-तीन फीट दूर फेंक देते हैं गहरे में। बच्चा घबड़ाता है, तड़फड़ाता है, हाथ-पैर फेंकता है। वही तैरने की शुरुआत है। हाथ-पैर फेंकना ही तैरने की शुरुआत है। फिर धीरे-धीरे व्यवस्था आ जाती है। पहले अव्यवस्थित फेंकता है। पहले घबड़ाहट में फेंकता है। फिर वे दौड़कर उसे बचा लेते हैं। फिर फेंकते हैं। फिर वे आते हैं किनारे पर। फिर फेंकते हैं। कभी मुंह में पानी चला जाता है, कभी नाक में पानी चला जाता है, कभी बड़ी घबड़ाहट होती है। कभी ऐसा लगता है कि यह तो बचना मुश्किल है, मरे! और कुछ नहीं सिखाते वे। दस-पांच दफा फेंकते हैं। हाथ-पैर में गति व्यवस्थित होने लगती है। दो-चार दिन में बच्चा तैरना सीख जाता है। सिखाते कुछ भी नहीं, सिर्फ पानी में तुम अपने से न कूद सकोगे, घबड़ाहट लगेगी, उतनी घबड़ाहट भर छीन लेने की बात है।

परमात्मा उपलब्ध है गुरु के बिना, मगर उपलब्ध हो न सकेगा। जब वह उपलब्ध हो जाएगा तब तुम जानोगे कि हो सकता था। लेकिन वह सदा बाद में।

कोलम्बस ने अमरीका खोजा। जब तक नहीं खोजा था, तो कोई भरोसा नहीं था किसी को; लोग सोचते थे यह गया, यह लौटनेवाला नहीं है। क्योंकि यह सिर्फ कल्पना के आधार पर कि यदि पृथ्वी गोल है... जो कि गैलिलिओ और कोपरनीकस ने सिद्ध कर दिया था कि पृथ्वी गोल है, मगर कोई देखा तो नहीं था; देखा तो अभी तक नहीं था। जब पहली दफा अन्तरिक्ष-यात्रा शुरु हुई और मनुष्य पृथ्वी के घेरे के बाहर गया तब पहली दफा दिखायी पड़ा कि पृथ्वी गोल है, इसके पहले तो किसी ने देखा न था, यह तो धारणा थी, तर्कसिद्ध थी, हजार प्रमाण थे इसके, लेकिन ये प्रमाण परोक्ष थे। कोलम्बस ने कहा कि 'जब पृथ्वी गोल है तो अगर मैं जाऊं यात्रा पर और करता ही रहूं यात्रा सीधा, सीधा, तो एक दिन वापस इसी जगह लौट आऊंगा। अगर बीच में कुछ हुआ तो मिल गयी कोई जगह तो ठीक है, नहीं तो वापस अपने घर आ जाएंगे। गोल अगर पृथ्वी है तो लौट ही आएंगे अपनी जगह, भटकने का कोई सवाल नहीं है।'

कोई साथ जाने को राजी न था। बड़ी मुश्किल से सालों की खोज के बाद अस्सी आदमी तैयार हो सके। उनमें कई ऐसे थे जो मरने को तत्पर थे, जिनको जिंदगी में कोई सार न था। कुछ पागल थे, दीवाने थे, उन्होंने कहा : 'चलो, कोई हर्जा नहीं; मरेंगे, और क्या होगा!' ढंग का कोई एक आदमी तैयार नहीं था। कुछ तो सम्राट की आज्ञा हुई थी, इसलिए कुछ सैनिकों को जाना पड़ रहा था, तो वे गये थे।

इन अस्सी आदमियों को लेकर कोलम्बस गया। जिसने धन की सहायता दी थी, जिस रानी ने, उसके दरबारियों ने कहा था, 'यह फिजूल पैसा खराब हो रहा है। ये अस्सी आदमी मरेंगे। ये लाखों रुपये खराब होंगे।' पर उस रानी ने कहा, 'करने दो, एक प्रयोग है, देखेंगे।'

कोलम्बस अमरीका खोजकर लौट आया। दरबार में उसका स्वागत हुआ। तो उन्हीं दरबारियों ने कहा, 'यह कोई क्या खास बात है, यह कोई भी खोज लेता। अगर पृथ्वी गोल है, कोई भी जाता तो मिल जाता।'

कोलम्बस की थाली में एक अंडा रखा था। उसने अंडा उठाया और उसने कहा, 'इसे कोई सीधा खड़ा करके बता दे टेबल पर।' कई ने कोशिश की खड़ा करने की; पर अब अंडा कैसे सीधा खड़ा हो? वह गिर-गिर जाए। उन्होंने कहा, 'यह हो ही नहीं सकता; यह असंभव है।'

कोलम्बस ने जोर से अंडे को ठोका टेबल पर, नीचे की पर्त सीधी हो गयी, अंदर दब गयी, अंडा खड़ा हो गया। उन्होंने कहा, 'अरे, यह तो कोई भी कर देता!' कोलम्बस ने कहा, 'लेकिन किसी ने किया नहीं।'

करने के बाद तो सभी कुछ आसान हो जाता है। करने के पहले असली सवाल है। उस करने के पहले गुरु की जरूरत है।

अनिवार्यता बिलकुल नहीं, और अनिवार्यता पूरी है। जानोगे, तब पाओगे : हो जाता है बिना गुरु के। लेकिन तब तुम यह भी पाओगे... अगर तुम पीछे लौटकर देखो कि हो नहीं सकता था, तुम हिम्मत ही न जुटा पाते।

– ओशो

भक्ति-सूत्र, प्रवचन-2, प्रश्न-2

(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)